UNIVERSITY NEWS 21 SEPTEMBER 2026

HINDUSTAN

लखनऊ विश्वविद्यालय में आयोजित गोमती पुस्तक महोत्सव का हुआ समापन, अंतिम दिन उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने की शिरकत

किताबों के उत्सव में उमड़े 4.5 लाख लोग, पौने तीन करोड़ की हुई बिक्री

समापन

लखनऊ, कार्यालय संवाददाता। पांचवें गोमती पुस्तक महोत्सव का रविवार को साहित्य, संस्कृति, कला और ज्ञान के विविध रंगों के साथ समापन हुआ। नौ दिनों तक चले महोत्सव में 4.5 लाख पुस्तक प्रेमियों और दर्शकों ने हिस्सा लिया, जबकि कुल 2.75 करोड़ रुपये की पुस्तकों की बिक्री दर्ज की गई। महोत्सव में 250 से अधिक स्टॉल लगाए गए और बच्चों, साहित्य तथा संस्कृति से जुड़े 75 से अधिक कार्यक्रम आयोजित हुए, जिनमें 240 से अधिक वक्ताओं और कलाकारों ने सहभागिता की।

लखनऊ विश्वविद्यालय में आयोजित पुस्तक महोत्सव में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के स्टॉल पर भी पाठकों की अच्छी रुचि देखने को मिली। यहां 7.5 लाख रुपये की पुस्तकों की बिक्री दर्ज की गई। समापन दिवस के चिल्ड्रन्स कॉर्नर में लगभग 2200 विद्यार्थियों ने योग, कहानी, वॉइस-ओवर, आपदा प्रबंधन और कला से जुड़ी गतिविधियों में भाग लिया। दिन की शुरुआत प्रतीक केशवानी और ललिता अधिकारी के 'बच्चों के लिए योग' सत्र से हुई।

250 से अधिक स्टॉल लगे, 240 वक्ता शामिल हुए

गोमती पुस्तक महोत्सव में रविवार को उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने डॉ. अमिताभ कुमार की दो पुस्तकों का विमोचन किया।

उपमुख्यमंत्री ने लखनऊ शहर-ए-अदब का विमोचन किया

समापन दिवस पर उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने स्टॉल पर प्रदर्शित पुस्तकों के बारे में जानकारी ली। इसके बाद उन्होंने डॉ. अमिताभ कुमार की दो पुस्तकों लखनऊ शहर-ए-अदब और इंडियन रेलवे : फ्रॉम स्टीम टू स्पीड का विमोचन किया। दिव्यांश पब्लिकेशंस से प्रकाशित इन पुस्तकों में एक ओर लखनऊ की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विरासत, वहीं दूसरी ओर भारतीय रेल के सफर, तकनीकी बदलाव और आधुनिक विकास यात्रा को केंद्र में रखा गया है। कार्यक्रम में परिवहन मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) दया शंकर सिंह विशिष्ट अतिथि रहे और आरडीएसओ के अपर महानिदेशक काजी मेराज अहमद ने अध्यक्षता की। इस अवसर पर जीएम/आरवीएनएल अनिल कुमार सिंह, अखिल भारतीय उद्योग व्यापार मंडल के राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप बंसल, राज्य सूचना आयुक्त मोहम्मद नदीम, आईएएस जय सिंह, लेखक व स्तंभकार डा. रहीस सिंह समेत अन्य मौजूद रहे।

छात्रसंघ चुनाव पर दिया आश्वासन

उप मुख्यमंत्री एलयू के पूर्व छात्र रहे हैं। ऐसे में नए छात्र भी उनसे बेझिझक अपनेपन में सवाल करते हैं। गोमती पुस्तक महोत्सव के दौरान एक छात्र ने उनसे पूछा कि लखनऊ विश्वविद्यालय में छात्रसंघ चुनाव कब होंगे। इस पर डिप्टी सीएम ने आश्वासन देते हुए कहा कि सरकार अपनी ओर से पूरी कोशिश कर रही है और जल्द ही इसके परिणाम सामने होंगे।

राम की दृष्टि में कैकेयी का चरित्र समझाती है पुस्तक

'लेखक से मिलिए' कार्यक्रम में पुस्तक 'कैकेयी के राम' पर लेखक डॉ. रहीस सिंह और डॉ. ललित किशोर मंडोरा ने संवाद किया।

लखनऊ। रामकथा को केवल धार्मिक आख्यान के रूप में नहीं, बल्कि मानवीय संवेदनाओं, रिश्तों और जीवन-मूल्यों के व्यापक संदर्भ में देखने की जरूरत है। इसी विचार को केंद्र में रखकर 'लेखक से मिलिए' कार्यक्रम में चर्चित पुस्तक 'कैकेयी के राम' पर लेखक डॉ. रहीस सिंह और डॉ. ललित किशोर मंडोरा ने संवाद किया। कार्यक्रम का आयोजन राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की परंपरा के अनुसार किया गया। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के सहायक संपादक डॉ. उमेशचन्द्र सिरसवारी ने डॉ. रहीस सिंह का शॉल ओढ़ाकर एवं पुस्तकें भेंटकर स्वागत किया। संवाद के दौरान लेखक डॉ. रहीस सिंह ने बताया कि श्रीरामचरितमानस के अध्ययन से प्रेरित होकर उन्होंने 'कैकेयी के राम' की रचना की। उन्होंने कहा कि राम का व्यक्तित्व मर्यादा, करुणा, त्याग और मानवीय संवेदना का प्रतीक है। कैकेयी के चरित्र पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि राम उन्हें 'महतारी' कहकर संबोधित करते थे। वनवास के निर्णय के बावजूद राम के मन में कैकेयी के प्रति सम्मान बना रहा। इसी दृष्टि से पुस्तक कैकेयी के चरित्र को केवल नकारात्मक रूप में देखने के बजाय राम के दृष्टिकोण से समझने का प्रयास करती है। डॉ. रहीस सिंह ने बताया कि पुस्तक के अब तक छह संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं।

ये भी रहा खास

अपूर्वा शाह की 'कहानी की पोटली' में कहानी और संगीत ने बच्चों को जोड़े रखा। अन्तिम दिन लेखिका मीरा की पुस्तक द डस्ट ऑफ माई हार्ट का विमोचन किया गया। वहीं कथाकार डॉ. रजनी गुप्त ने पद्मश्री विद्याबिंदु सिंह से लोक साहित्य, परंपराओं पर संवाद किया।

AMAR UJALA

मानसिक तनाव से ग्रसित महिलाओं की काउंसिलिंग जरूरी

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। कामकाजी हो या घरेलू, महिलाओं के लिए अपनी व्यस्त दिनचर्या के बीच खुद के लिए समय निकालना और मन की बात साझा करना जरूरी है। भावनाओं को दबाते रहने से तनाव बढ़ सकता है और कई बार स्थिति अवसाद तक पहुंच सकती है। इसलिए किसी विश्वस्त व्यक्ति से बात करें या जरूरत महसूस होने पर काउंसलर की मदद लें। यह सलाह लखनऊ विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग की प्रो. मानिनी श्रीवास्तव ने रविवार को अमर उजाला फाउंडेशन के अपराजिता कार्यक्रम में दी।

इंदिरानगर ए-ब्लॉक स्थित आरडब्ल्यूए में आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि महिलाओं को रोजाना सात से आठ घंटे की नींद, नियमित व्यायाम और तनाव कम करने के उपायों को दिनचर्या का हिस्सा बनाना चाहिए। काउंसलर के पास जाने के लिए गंभीर मानसिक या शारीरिक बीमारी का इंतजार जरूरी नहीं है। किसी असमंजस या शरीर में होने वाले बदलाव को लेकर भी विशेषज्ञ से सलाह ली जा सकती है।

प्रो. मानिनी ने महिलाओं से खुद के प्रति कठोर होने के बजाय करुणा का भाव रखने, अपनी समस्याओं और बाधाओं को पहचानने और जरूरत पड़ने पर अपनी बात मजबूती से रखने की अपील की। उन्होंने 'आज फिर जीने की तमन्ना है...' गीत पर महिलाओं को खुलकर नाचने के लिए प्रेरित किया तो महिलाएं बिना झिझक झूम उठीं।

आरडब्ल्यूए के जनरल सेक्रेटरी सुनील त्यागी के संयोजन में एग्जीक्यूटिव मेंबर मीना सोती, बीना त्यागी, कमल सक्सेना, माला माथुर, अल्का सक्सेना, नीलम प्रकाश, गीतांजलि जोशी, वंदना, ममता बिष्ट साहिना, रीना चौरसिया, पल्लवी सिंह, पूनम, अनीता गर्ग, रचना माथुर, शिप्रा श्रीवास्तव, बीना धर्मलियाल, भारती, पुष्पा श्रीवास्तव, सविता, कविता, रीना अग्रवाल, दीपिका और मानसी कपूर समेत करीब सौ महिलाएं मौजूद रहीं।

इंदिरानगर ए-ब्लॉक स्थित आरडब्ल्यूए में आयोजित कार्यक्रम में महिलाओं के साथ प्रो. मानिनी श्रीवास्तव, रिटायर्ड डीआईजी किरण यादव। अमर

आरडब्ल्यूए की महिलाओं के लिए अपराजिता कार्यक्रम में दिए गए तनाव दूर करने के टिप्स

■ गंभीर मामलों में 1090 की मदद लें : सेवानिवृत्त डीआईजी, महिला एवं बाल सुरक्षा संगठन 1090 किरण यादव ने कहा कि किसी भी गंभीर परेशानी में महिलाएं 1090 की मदद ले सकती हैं। उन्होंने बताया कि शिकायत की गोपनीयता रखते हुए कार्रवाई की जाती है। उन्होंने महिलाओं को अपने आसपास या सहकर्मियों का समूह बनाकर नियमित रूप से मिलने और तनाव साझा करने का सुझाव दिया।

AMRIT VICHAR

लविवि में दान देने वालों को टैक्स में मिलेगी छूट

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

- लखनऊ विश्वविद्यालय के नवांकुर फाउंडेशन को मिला सीएसआर पंजीकरण

अमृत विचार : लखनऊ विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के नवाचारों, नए बिजनेस आइडिया और स्टार्टअप्स को प्रोत्साहित करने के लिए इनक्यूबेशन सेंटर के तहत संचालित 'नवांकुर फाउंडेशन' को केंद्र सरकार ने कॉरपोरेट सामाजिक जिम्मेदारी (सीएसआर) गतिविधियों के लिए अधिकृत कर पंजीकरण किया है। कंपनी रजिस्ट्रार (आरओसी) कार्यालय ने संस्था को पंजीकरण संख्या आवंटित कर कंपनियों से सीएसआर फंड प्राप्त करने की वैधानिक मंजूरी दे दी है।

नवांकुर फाउंडेशन लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा कंपनी अधिनियम के तहत स्थापित एक नॉट-फॉर-प्रॉफिट (सेक्शन-8) कंपनी और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण उपक्रम है। इसका मुख्य उद्देश्य परिसर के विद्यार्थियों, शोधार्थियों और शिक्षकों में नवाचार, उद्यमिता और स्टार्टअप संस्कृति को बढ़ावा देना है। यह संस्था युवाओं के विचारों को सफल उद्यम में बदलने के लिए मेंटरशिप, तकनीकी मार्गदर्शन, प्रोटोटाइपिंग और इनक्यूबेशन की सुविधाएं एक ही छत के नीचे उपलब्ध कराती है।

80 जी के तहत मिलेगी छूट

■ इस पंजीकरण के बाद औद्योगिक घरानों, कंपनियों, पुरातन छात्रों अथवा नागरिकों द्वारा फाउंडेशन को दी जाने वाली सहयोग राशि पर आयकर कानून की धारा 80जी के तहत टैक्स में सीधी छूट मिलेगी। इसके अलावा, औद्योगिक कंपनियां अपने वैधानिक सामाजिक दायित्व (सीएसआर) के तहत निर्धारित बजट का निवेश सीधे लखनऊ विश्वविद्यालय के इस इनक्यूबेशन केंद्र में करके अपने विधिक दायित्वों को पूरा कर सकेंगी। इस दोहरे लाभ से उद्योग जगत और पूर्व छात्र नवाचारों को प्रोत्साहित करने के लिए खुलकर आगे आ सकेंगे।

विद्यार्थियों को मिलेगी मदद

■ इस वित्तीय संबल से विद्यार्थियों के स्टार्टअप्स को शुरुआती सीड पूंजी उपलब्ध कराने में आसानी होगी। साथ ही आधुनिक तकनीकी प्रयोगशालाओं के विस्तार, उत्पाद परीक्षण, पेटेंट संरक्षण और समाजोपयोगी अनुसंधानों को व्यावहारिक धरातल पर उतारने में गति आएगी। यह पहल युवाओं को आत्मनिर्भर बनाकर रोजगार सृजक बनने की दिशा में अग्रसर करेगी, जिससे शिक्षा, उद्योग और समाज के बीच मजबूत सेतु स्थापित होगा।

NBT

साहित्य और संस्कृति का अड्डा | साहित्य, संस्कृति, कला और ज्ञान के रंगो के साथ पांचवां गोमती पुस्तक महोत्सव समाप्त

4.5 लाख पुस्तकप्रेमी पहुंचे, 2.75 करोड़ की बिकीं किताबें

■ NBT न्यूज, लखनऊ : नौ दिनों तक लखनऊ विवि में चले पांचवें गोमती पुस्तक महोत्सव का रविवार को साहित्य, संस्कृति, कला और ज्ञान के रंगों के साथ समापन हो गया। इस दौरान 4.5 लाख दर्शकों ने हिस्सा लिया, 250 से अधिक स्टॉल लगाए गए और कुल 2.75 करोड़ रुपये की पुस्तकें बिकीं।

रविवार को उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने पुस्तक मेले में डॉ. अमिताभ कुमार की दो पुस्तकों 'लखनऊ शहर-ए-अदब' और 'इंडियन रेलवे : फ्रॉम स्टीम टो स्पीड' का लोकार्पण किया। कार्यक्रम में परिवहन मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) दया शंकर सिंह विशिष्ट अतिथि और आरडीएसओ के अपर महानिदेशक काजी मेराज अहमद अध्यक्ष रहे। मौके पर जीएम/आरवीएनएल अनिल कुमार सिंह, अखिल भारतीय उद्योग व्यापार मंडल के अध्यक्ष संदीप बंसल, राज्य सूचना आयुक्त मोहम्मद नदीम, आईएएस जय सिंह, लेखक रहीस सिंह, वरिष्ठ पत्रकार नवलकांत और प्रकाशक नीरज अरोड़ा सहित अन्य मौजूद रहे।

लेखक से मिलिए सत्र में पद्मश्री विद्या बिंदु सिंह से डॉ. रजनी गुप्त ने लोक साहित्य और संस्कृति पर बातचीत की।

फेक न्यूज, फैक्ट-चेकिंग पर चर्चा

पत्रकारिता एवं समकालीन चुनौतियां: 'लोकतंत्र का चौथा स्तंभ' सत्र में प्रो. संजय मोहन जौहरी ने पत्रकारिता की स्वतंत्रता, सामाजिक जिम्मेदारी, सोशल मीडिया, एआई, फेक न्यूज और फैक्ट-चेकिंग के महत्व पर चर्चा की। वहीं लेखक से मिलिए सत्र में लेखक रहीस सिंह और डॉ. ललित किशोर मंडोरा ने छह संस्करणों वाली पुस्तक 'कैकेयी के राम' के मानवीय और अलग दृष्टिकोण पर संवाद किया। डॉ. रजनी गुप्त ने पद्मश्री विद्या बिंदु सिंह के साथ लोक साहित्य, लोक परंपराओं, सामाजिक स्मृतियों और बच्चों की बदलती सोच के अनुरूप बाल साहित्य रचने पर विचार साझा किए।

यह भी रहे खास

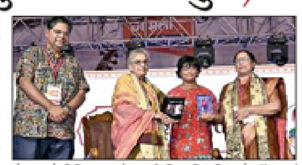

NBT स्टॉल पर बिक्री: राष्ट्रीय पुस्तक न्यास (NBT) के स्टॉल पर 7.5 लाख रुपये की बिक्री दर्ज की गई, जिसमें Exam Warriors, The Mother of Democracy और Chandrayaan जैसी पुस्तकों को पाठकों ने बेहद पसंद किया।

चिल्ड्रन्स कॉर्नर (बाल गतिविधियां): पूरे महोत्सव में 15,000 से अधिक बच्चों ने भाग लिया। समापन दिवस पर लगभग 2200 विद्यार्थियों ने रचनात्मक सहयोग दिया।

योग सत्र: प्रतीक केशवानी और ललिता अधिकारी के साथ ध्यान, संतुलन और स्वस्थ जीवनशैली की जानकारी दी गई।

विशेष साहित्यिक व पुस्तक लोकार्पण सत्र: लेखिका मीरा (समर खान) की पुस्तक The Dust on My Heart पर विशेष सत्र आयोजित हुआ और मुख्य अतिथि प्रो. रवींद्र प्रताप सिंह (निदेशक, अंतरराष्ट्रीय इकाई, अंग्रेजी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय) की उपस्थिति में इसका लोकार्पण हुआ।

'प्रेरणा देता है राही का साहित्य'

■ NBT न्यूज,लखनऊ : जन संस्कृति मंच (जसम) की ओर से शायर तश्ना आलमी के नौवें स्मृति दिवस पर यूपी प्रेस क्लब में डॉ. राही मासूम रजा जन्मशती समारोह हुआ। अध्यक्षता अभिनव कदम के संपादक जयप्रकाश धूमकेतु ने की। कार्यक्रम में शब्बीर हसन 'अली सागर' लिखित नाटक 'डॉक्टर तश्ना आलमी: एक अजूबा' का विमोचन हुआ।

'सौ साल के राही' परिचर्चा में दिल्ली से आए अबू हुरैरा, प्रो. इशरत नाहिद, शकील सिद्दीकी और धूमकेतु ने विचार रखे। वक्ताओं ने कहा कि 'आधा गांव', 'टोपी शुक्ला' व 'कटरा बी आरजू' जैसे उपन्यासों में विशुद्ध हिंदुस्तानी जुबान और भोजपुरी की मिठास घुली है। उनका साहित्य साझी संस्कृति का परचम बुलंद करता है और सांप्रदायिकता के खिलाफ संघर्ष की प्रेरणा देता है। मौके पर हरिचरण प्रकाश, डॉ. उषा राय, इरा श्रीवास्तव, नैय्यर उमर, अशोक मिश्रा, धर्मेंद्र कुमार, अलका पांडे सहित अन्य मौजूद रहे।

AMAR UJALA

महोत्सव | साहित्य, परंपरा और डिजिटल पठन पर संवाद के साथ गोमती पुस्तक महोत्सव का समापन

4.5 लाख पुस्तकप्रेमी... 2.75 करोड़ की किताबें बिकीं

संवाद न्यूज एजेंसी

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित पांचवें गोमती पुस्तक महोत्सव में नौ दिनों में करीब 4.5 लाख पुस्तकप्रेमी पहुंचे। पिछले वर्ष के मुकाबले यह संख्या करीब एक लाख अधिक रही। 12 से 20 सितंबर तक चले महोत्सव में लगभग 2.75 करोड़ रुपये की पुस्तकों की बिक्री हुई।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के अनुसार, महोत्सव में 250 स्टॉल लगाए गए और साहित्य, संस्कृति व बच्चों से जुड़े 75 कार्यक्रम हुए, जिनमें 240 से अधिक वक्ताओं और कलाकारों ने भाग लिया। 15 हजार से अधिक स्कूली बच्चे भी विभिन्न गतिविधियों में शामिल हुए। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के स्टॉल पर नौ दिनों में 7.5 लाख रुपये की पुस्तकों की बिक्री दर्ज की गई। एग्जाम वॉरियर्स, द मदर ऑफ डेमोक्रेसी और चंद्रयान पाठकों की पसंद रहीं।

उप मुख्यमंत्री ने दो पुस्तकों का किया लोकार्पण

समापन समारोह में उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने डॉ. अमिताभ कुमार की पुस्तकों 'लखनऊ-शहर ए अदब' और 'इंडियन रेलवे-फ्रॉम स्टीम टू स्पीड' का लोकार्पण किया। उन्होंने युवाओं को निरंतर प्रयास करते हुए आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में परिवहन मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) दयाशंकर सिंह विशिष्ट अतिथि रहे। आरडीएसओ के अपर महानिदेशक काजी मेराज अहमद ने अध्यक्षता की। इस दौरान जीएम आरवीएनएल अनिल कुमार सिंह, अखिल भारतीय उद्योग व्यापार मंडल के राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप बंसल, राज्य सूचना आयुक्त मोहम्मद नदीम, आईएएस जय सिंह, लेखक रहीस सिंह, वरिष्ठ पत्रकार नवलकांत सिन्हा और प्रकाशक नीरज अरोड़ा मौजूद रहे।

लखनऊ विश्वविद्यालय में लगे गोमती पुस्तक महोत्सव में किताबें देखते लोग। अमर

■ **कविता जीवन के अंतर्द्वंद्वों में ऊर्जा चक्र बनाती है : प्रो. आरपी सिंह**

कवयित्री मीरा के काव्य संग्रह 'द डस्ट ऑन माई हार्ट' का भी विमोचन हुआ। लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रो. रवींद्र प्रताप सिंह ने कहा कि कविता जीवन के अंतर्द्वंद्वों में ऊर्जा चक्र बनाती है और भावनात्मक शीतलता देती है। संग्रह में जीवन, समाज और अंतर्द्वंद्वों पर केंद्रित 70 कविताएं हैं।

■ **छात्रसंघ चुनाव पर डिप्टी सीएम से पूछा सवाल :** महोत्सव में एक कार्यक्रम में शामिल होने पहुंचे उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक से एक छात्र ने कहा कि अभी हाल ही में दिल्ली विवि में छात्रसंघ के चुनाव हुए हैं और रिजल्ट आने पर भाजपा नेताओं ने विजेताओं को बधाई भी दी है। छात्र ने पूछा कि इसके बावजूद उत्तर प्रदेश में छात्रसंघ चुनाव क्यों नहीं कराए जा रहे हैं। पूछा कि यूपी में छात्रसंघ चुनाव आखिर कब होंगे। इस पर डिप्टी सीएम ने आश्वासन दिया।

बाल मंडप में करीब 2200 विद्यार्थियों ने योग, कहानी, वॉइस-ओवर, आपदा प्रबंधन और कला संबंधी गतिविधियों में हिस्सा लिया। साहित्यिक सत्रों में पत्रकारिता, लोकतंत्र, सोशल मीडिया, एआई, फेक न्यूज, और रामकथा के विभिन्न पक्षों पर चर्चा हुई। एक अन्य सत्र में डॉ. रजनी गुप्त ने पद्मश्री विद्याबिंदु सिंह से लोक साहित्य, लोक परंपराओं और बाल साहित्य पर चर्चा की।

सांस्कृतिक संध्या में आरजे प्रतीक के साथ भक्ति बीट्स ने प्रस्तुति दी। राष्ट्रीय ई-पुस्तकालय में प्रतिदिन करीब 500 लोगों ने डिजिटल सामग्री में रुचि दिखाई।

AMAR UJALA

हैप्पी थिंकिंग लैब में फिर लौटी मुस्कान

अभिषेक सहज

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी हैप्पी थिंकिंग लेबोरेटरी की मुस्कान फिर से लौट रही है। इसे नए सिरे से सक्रिय किया जा रहा है। वर्ष 2020 में स्थापित इस लैब के संचालन की जिम्मेदारी मनोविज्ञान विभाग को दी गई है।

वीडियो के लिए स्कैन करें।

लैब के जरिये विद्यार्थियों और शोधार्थियों की मानसिक एवं भावनात्मक स्थिति का आकलन करने के साथ ही उनकी समस्याओं के समाधान की दिशा में काम किया जाएगा। वर्ष 2023 से इस लैब के संचालन में सुस्ती आ गई थी।

मनोविज्ञान विभाग की अध्यक्ष प्रो. अर्चना शुक्ला ने बताया कि लैब का उद्देश्य विद्यार्थियों में मानसिक स्वास्थ्य, सकारात्मक सोच, भावनात्मक संतुलन और तनाव प्रबंधन को बढ़ावा देना है। यहां मनोवैज्ञानिक परीक्षणों और आकलन की सुविधाओं के साथ शोध के लिए भी संसाधन उपलब्ध हैं। इनके माध्यम से तनाव, चिंता, भावनात्मक स्थिति और व्यवहार संबंधी समस्याओं की पहचान में मदद मिलेगी। जरूरत के अनुसार परामर्श व समाधान की दिशा में भी काम किया जाएगा।

लविवि का मनोविज्ञान विभाग कर रहा संचालन, मानसिक स्वास्थ्य पर जांच और शोध को मिलेगी गति

■ **इन बिंदुओं पर होगा काम :** विद्यार्थियों की मानसिक एवं भावनात्मक स्थिति का आकलन, तनाव और चिंता से जुड़ी समस्याओं की पहचान, मनोवैज्ञानिक परीक्षण, जरूरत के अनुसार परामर्श और समाधान की दिशा में मदद, मानसिक स्वास्थ्य पर शोध, शोधार्थियों के प्रोजेक्ट और अध्ययन में सहयोग, सकारात्मक सोच और भावनात्मक कल्याण से जुड़ी गतिविधियां।

UNIVERSITY NEWS 21 SEPTEMBER 2026

DAINIK JAGRAN

गोमती पुस्तक महोत्सव में नई पीढ़ी को भी भाए पुराने पन्ने

मेले में 'गुनाहों का देवता' की बिकीं सर्वाधिक एक हजार प्रतियां

महेन्द्र पाण्डेय • जागरण

लखनऊ : समय बदलता रहा, पढ़ने के माध्यम बदलते रहे और हाथों में किताब की जगह मोबाइल की स्क्रीन भी आ गई, लेकिन कुछ कहानियां ऐसी हैं, जिनके पन्ने आज भी पाठकों को अपनी ओर बुलाते हैं। चंदर और सुधा (गुनाहों का देवता के पात्र) का वह संसार, प्रेमचंद का सामाजिक यथार्थ और भारतीय जीवन की मिट्टी से उठते पात्र... आज भी पाठकों के मन में जगह बनाए हुए हैं। इसकी झलक गोमती पुस्तक महोत्सव में दिखाई दी। यहां नई पुस्तकों के बीच पुरानी और कालजयी कृतियों की मांग अधिक रही। विशेष बात यह कि नई पीढ़ी को भी पुराने पन्ने पसंद आए।

लखनऊ विश्वविद्यालय में आयोजित गोमती पुस्तक महोत्सव के अंतिम दिन रविवार को कोई साहित्य की दुनिया में अपनी पसंद तलाश रहा था तो कोई वर्षों से मन में बसी किताब को अपने साथ घर ले जाना चाहता था। प्रकाशकों के अनुसार इस बार बिक्री में धर्मवीर भारती की 'गुनाहों का देवता' सबसे आगे रही। इसकी एक हजार से अधिक प्रतियां बिकीं। बिक्री में दूसरे स्थान पर मुंशी प्रेमचंद की 'गबन' रही। इसकी करीब 600 प्रतियां पाठकों ने खरीदीं। प्रेमचंद की ही 'गोदान' की लगभग 550 प्रतियां बिकीं। केवल वाणी प्रकाशन के स्टाल पर 'गुनाहों का देवता' की 300 प्रतियां बिकीं। प्रकाशन के राकेश सिन्हा ने बताया कि इस कृति की मांग महोत्सव के अधिकतर स्टालों पर रही। महोत्सव में 121 प्रकाशकों के 250 स्टाल लगे थे। इनमें से करीब 50 प्रकाशक गुनाहों की देवता लेकर आए थे। लगभग सभी स्टालों पर इस रचना की 10-20 प्रतियां बिकीं। वाणी प्रकाशन के स्टाल पर विनोद कुमार शुक्ल की 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' की 100 से अधिक प्रतियां बिकीं। जान एलिया की 'मैं जो हूं' की बिक्री का आंकड़ा 200 पार कर गया। नई पीढ़ी के सामने आज पढ़ने के लिए अनगिनत डिजिटल विकल्प हैं, लेकिन उन्हें पुस्तक मेले में प्रेम, समाज, संघर्ष और मनुष्य के भीतर के द्वंद्व को गहराई से कहने वाली रचनाओं को ले जाते देखना सुखद है।

गोमती पुस्तक महोत्सव में नई पीढ़ी ने खूब सीं मनपसंद पुस्तकें • जागरण

महोत्सव में आए 4.5 लाख पुस्तकप्रेमी, 2.75 करोड़ की बिकी

नौ दिनों तक चले गोमती पुस्तक महोत्सव में 4.5 लाख पुस्तक प्रेमियों और दर्शकों ने हिस्सा लिया, जबकि 2.75 करोड़ रुपये की पुस्तकें बिकीं। महोत्सव के आयोजक नेशनल बुक ट्रस्ट के अनुसार बच्चों, साहित्य व संस्कृति से जुड़े 75 से अधिक कार्यक्रम आयोजित हुए, जिनमें 240 से अधिक वक्ताओं के साथ कलाकारों ने सहभागिता की। बाल गतिविधियों में 15,000 से अधिक बच्चों ने हिस्सा लिया। ट्रस्ट के स्टाल पर 7.5 लाख रुपये की पुस्तकों की बिक्री हुई।

छात्रसंघ चुनाव पर जल्दी मिलेगी अच्छी खबर : ब्रजेश पाठक

आरडीएसओ के निदेशक एवं लेखक डा. अमिताभ कुमार की दो पुस्तकों का विमोचन करते उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक व अन्य • जागरण

जागरण संवाददाता • लखनऊ : दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रसंघ चुनाव का परिणाम आने के बाद इसकी सरगर्मी रविवार को लखनऊ तक पहुंच गई। एक छात्र ने उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक से पूछा कि आप दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रसंघ चुनाव का परिणाम आने पर बधाई दे हैं, लखनऊ विश्वविद्यालय में यह चुनाव कब होंगे ? उपमुख्यमंत्री ने कहा, इस विषय पर नजर बनाए हूं। जल्द ही आप लोगों को अच्छी खबर सुनने को मिलेगी।

गोमती पुस्तक महोत्सव के अंतिम दिन उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने आरडीएसओ के निदेशक अमिताभ की पुस्तक 'लखनऊ-शहर-ए-अदब' और 'इंडियन रेलवेज फ्राम स्टीम टू स्पीड' का विमोचन किया। इस दौरान राज्य सूचना आयुक्त मो. नदीम, पद्मश्री विद्याबिंदु सिंह, अखिल भारतीय भारत व्यापार मंडल के राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप बंसल भी मौजूद रहे।

'गुंडा', 'मुसाफिर कैफे' व 'मैं कौन हूं' भी मांग : महोत्सव में जयशंकर प्रसाद की कृति 'गुंडा' की 300 से अधिक प्रतियां बिकीं। दिव्यांश पब्लिकेशन पर इसकी 100 प्रतियों में 10 ही बचीं। अन्य स्टालों पर भी इसकी मांग रही। पब्लिकेशन के चैतन्य अरोड़ा ने बताया कि ओशो की 'मैं कौन हूं' की 160, दिव्य प्रकाश दुबे की 'मुसाफिर कैफे' की 150 व नीलोत्पल मृणाल की 'डार्क हार्स' की भी 150 प्रतियां बिकीं। निखिल प्रकाशन के स्टाल पर 'कफन', 'गबन' व 'गोदान' की 90-90 प्रतियां और कबीर ग्रंथावली की भी 40 प्रतियां बिकीं।

TIMES OF INDIA

With 4.5L visitors, book festival clocks ₹2.75-crore sales

TIMES NEWS NETWORK

Lucknow: In an age when screens compete for every spare minute, the city of Nawabs appears to be turning the page—literally. The fifth Gomti Book Festival drew around 4.5 lakh visitors and recorded book sales worth Rs 2.75 crore during its nine-day run at Lucknow University, offering a reminder that the printed word continues to find an audience in the digital age. Over 250 stalls featuring books across genres were set up at the festival, attracting readers of all age groups. The response was higher than last year, when the fourth edition recorded an estimated footfall of around 3.5 lakh visitors.

National Book Trust officials said the sales reflected diverse reading preferences, with children's books, Hindi literature, fiction, books on India and nation-building, self-help and educational titles drawing considerable interest. The trust's stall alone recorded sales of Rs 7.5 lakh.

"The footfall and sales demonstrated that readers remain keen to buy and read books when a wide range of titles is available under one roof," said Santosh, a National Book Trust official.

Among the titles that attracted attention were Exam Warriors, The Mother of Democracy and Chandrayaan. The festival also introduced visitors to the Rashtriya e-Pustakalaya, which offers access to thousands of digital titles. The festival hosted more than 75 literary, cultural and children's programmes involving over 240 speakers and artists.

ON THE SAME PAGE: Visitors at the Gomti Book Festival on Sunday

'Kaikeyi was catalyst in Ram's turning into Maryada Purushottam'

Anjanaya Singh | TNN

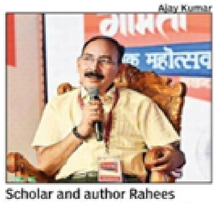
Ajay Kumar
Scholar and author Rahees Singh at the Gomti book festival on Sunday

Lucknow: What if the woman who is remembered as the cause of Lord Rama's exile was, in fact, one of the silent architects of his greatness?

In the familiar telling of the Ramayana, queen Kaikeyi is often portrayed as the mother whose demand sent Lord Rama into the forest. Yet, beneath this tragedy lies a more profound relationship—one shaped by duty, sacrifice, love and the testing of moral consciousness.

Scholar and author Rahees Singh offered a striking perspective on Kaikeyi's place in Rama's journey at the Gomti book festival on Sunday.

"If you reduce Lord Rama to an idol, a statue or a framed picture, you would not need Kaikeyi. But if you wish to see Lord Rama through the lens of pure compassion, that Lord Rama cannot be realised without stepping out through the doorway of mother Kaikeyi," said Singh. He added that Kaikeyi, remembered as a warrior queen with knowledge of warfare and statecraft was not merely Lord Rama's stepmother. She loved him deeply. Her demand for his exile can therefore be viewed in this interpretation, not simply as an act of hostility but as a painful catalyst for his transformation.

"The forest exposed Rama to lives far beyond palace walls—to ascetics, boatmen, tribal communities and people living at society's margins. His encounters with Kewat and Shabari deepened his understanding of compassion, dignity and service," said Singh.

He said that Kaikeyi carried the burden of condemnation. As Singh observed, she endured "the world's abuses for 14 years" and even the anguish of rejection by her own family. "Through the doorway of Kaikeyi's sacrifice, Lord Rama entered the wilderness—and emerged as 'Maryada Purushottam'," said Singh.

AMRIT VICHAR

अंतर्द्वंद्वों को सहेजती है कविता : प्रो. रवीन्द्र

अमृत विचार, लखनऊ : सृजन और कृतित्व लेखक के चारों ओर एक ऐसे ऊर्जा चक्र का निर्माण करता है, जिससे वह बाहरी अंतर्द्वंद्वों कभी परास्त नहीं होता। मशीनी अर्थव्यवस्था के इस दौर में कविता की उपयोगिता पर सवाल उठते रहते हैं, लेकिन काव्य की अभिव्यंजना को समझते ही इसकी महत्ता का बोध स्वत : हो जाता है। अच्छी कविता अपने प्रभावों से ऐसे समाज की रचना करती है, जहां बोझिल जीवन को भावनात्मक संबल मिलता है और जीवन के विभिन्न प्रश्नों के उत्तर भी मिलते हैं। यह विचार लखनऊ विश्वविद्यालय के वरिष्ठ प्रोफेसर रवीन्द्र प्रताप सिंह ने नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित गोमती बुक फेस्टिवल के दौरान व्यक्त किए। वह अंग्रेजी कवियत्री मीरा की पुस्तक ''द डस्ट ऑन माई हार्ट'' के विमोचन अवसर पर आयोजित परिचर्चा को संबोधित कर रहे थे। इस काव्य संग्रह में जीवन, समाज और मानवीय अंतर्द्वंद्वों पर केंद्रित 70 कविताएं शामिल हैं।

AAJ

लविवि के नवांकुर फाउंडेशन को केंद्र सरकार से मिला सीएसआर पंजीकरण

● नवाचार व स्टार्टअप्स को वित्तीय सहयोग देने वालों को मिलेगा आयकर में लाभ

लखनऊ। लविवि में छात्र-छात्राओं के नए विचारों, स्टार्टअप्स और नवाचारों को पंख देने की दिशा में एक बड़ी सफलता हासिल हुई है। विश्वविद्यालय परिसर स्थित इनक्यूबेशन सेंटर के अंतर्गत संचालित 'नवांकुर फाउंडेशन' को भारत सरकार के कॉरपोरेट मामलों के मंत्रालय (एमसीए) द्वारा आधिकारिक तौर पर पंजीकृत कर लिया गया है। केंद्र सरकार के कंपनी रजिस्ट्रार (आर ओसी) कार्यालय ने संस्था को पंजीकरण संख्या आवंटित करते हुए कंपनियों से सीएसआर फंड प्राप्त करने की पूर्ण वैधानिक मंजूरी प्रदान कर दी है।

बता दें कि 'नवांकुर फाउंडेशन' लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा कंपनी अधिनियम के तहत स्थापित एक विशेष नॉट-फॉर-प्रॉफिट (सेक्शन-8) कंपनी और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण उपक्रम है। इसकी स्थापना परिसर के विद्यार्थियों, शिक्षकों और शोधार्थियों में नवाचार, उद्यमिता, इनक्यूबेशन और स्टार्ट अप संस्कृति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से की गई है। यह संस्था युवाओं के व्यावहारिक एवं व्यावसायिक विचारों को सफल उद्यम में बदलने के लिए एक मजबूत मंच के रूप में कार्य करती है, जहां उन्हें मेंटरशिप, तकनीकी मार्गदर्शन, प्रोटोटाइपिंग और इनक्यूबेशन की सुविधाएं एक ही छत के नीचे उपलब्ध कराई जाती हैं।

सहयोग करने वालों को टैक्स में बड़ा लाभ: नवांकुर फाउंडेशन को मिले इस नए वैधानिक दर्जे का सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि जो भी औद्योगिक घराने, व्यावसायिक कंपनियां, पूर्व छात्र या आम नागरिक विश्वविद्यालय के नवाचार अभियान में वित्तीय सहयोग देंगे, उन्हें आयकर के नियमों के तहत सीधा फायदा मिलेगा। संस्था को दी जाने वाली सहयोग राशि पर आयकर कानून की धारा 80 के तहत टैक्स में सीधी छूट का लाभ प्राप्त होगा। इसके साथ ही, जो कंपनियां अपने वैधानिक सामाजिक दायित्व (सीएसआर) के तहत समाज और शिक्षा के क्षेत्र में काम करना चाहती हैं, वे अपने बजट का निवेश सीधे लखनऊ विश्वविद्यालय के इस इनक्यूबेशन केंद्र में करके अपने कानूनी सीएसआर दायित्व को पूरा कर सकेंगी। इस दोहरे लाभ के चलते अधिक से अधिक दानदाता और उद्योग जगत के प्रतिनिधि आगे आकर प्रतिभाशाली युवाओं की मदद कर सकेंगे।

AMAR UJALA

लविवि के नवांकुर को सीएसआर की मंजूरी

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के नवांकुर फाउंडेशन को केंद्र सरकार से कॉरपोरेट सामाजिक जिम्मेदारी (सीएसआर) के तहत निधि प्राप्त करने का पंजीकरण मिल गया है। इससे विद्यार्थियों के नए कारोबारी विचारों और स्टार्टअप्स को शुरुआती पूंजी मिलेगी। विश्वविद्यालय परिसर स्थित इनक्यूबेशन सेंटर की आधुनिक तकनीकी प्रयोगशालाओं का विस्तार होगा। उत्पाद परीक्षण और बौद्धिक संपदा (पेटेंट) संरक्षण में भी तेजी आएगी। नवांकुर फाउंडेशन कंपनी अधिनियम के तहत एक नॉट-फॉर-प्रॉफिट कंपनी है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों, शिक्षकों और शोधार्थियों में नवाचार व उद्यमिता को बढ़ावा देना है। यह युवाओं को मेंटरशिप, तकनीकी मार्गदर्शन और इनक्यूबेशन की सुविधाएं देता है। दानदाता आयकर की धारा 80जी के तहत कर छूट का लाभ ले सकेंगे। कंपनियां अपने सीएसआर दायित्व के तहत फाउंडेशन में निवेश कर सकेंगी। (माई सिटी रिपोर्टर)

HINDUSTAN

नवांकुर फाउंडेशन को सीएसआर पंजीकरण

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के इनक्यूबेशन सेंटर के अंतर्गत संचालित नवांकुर फाउंडेशन को कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) गतिविधियों के लिए केंद्र सरकार के कॉरपोरेट कार्य मंत्रालय से पंजीकरण मिल गया है। कंपनी रजिस्ट्रार कार्यालय की ओर से फाउंडेशन को सीएसआर पंजीकरण संख्या भी जारी कर दी गई है। फाउंडेशन का उद्देश्य विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों, शिक्षकों और शोधार्थियों के बीच नवाचार, उद्यमिता और स्टार्टअप संस्कृति को बढ़ावा देना है।